रस, छंद, अलंकार, तत्सम-तद्भव, पर्यायवाची, उपसर्ग, समास, शब्द रूप , वाच्य, वाक्य, विकारी अविकारी 10 अंक पक्का

हास्य रस

परिभाषा-

किसी की विकृत वेशभूषा, चेष्टा आदि को देखकर जब 'हास' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब हास्य रस की निष्पत्ति होती है।

जैसे -

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली ।।
पुनि-पुनि मुनि उमगहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।"

स्पष्टीकरण- स्थायी भाव- हास

विभाव - आलम्बन - नारद मुनि आश्रय- हर-गन

उद्दीपन- विलक्षण आकृति, चेष्टा ।

अनुभाव- हँसना, खड़े होना, भागना।

संचारी भाव- हर्ष, चपलता, चंचलता ।

अन्य उदाहरण–

बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रत-धारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।।
स्वैहैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि काननु को पगु धारे।।

हँसि हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को
पाहुनि जे आवै हिमाँचल के उछाह में।

कहैं पद्माकर सो काहु सो कै को कहा
जोई जहाँ देखै सो हंसेइ तहाँ राह में।

मगन भयेऊ हंसे नगन महेश ठाढ़े
और हंसै एऊ हंसी हंसी के उमाह में।

शीश पर गंगा हंसे भुजनि भुजंगा हंसे
हास ही को दंगो भयो नंगा के विवाह में।।

करुण रस

परिभाषा- 'शोक' नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव, संचारी भाव आदि के संयोग से 'करुण रस' की निष्पत्ति होती है।

अथवा

ईप्सित/इष्ट वस्तु के नाश से जब हृदय में क्षोभ/दुःख उत्पन्न होता है, उस उत्पन्न क्षोभ/दुःख को करुण रस कहते हैं।

जैसे-

"अभी तो मुकुट बंधा था माथ।
हुए कल ही हल्दी के हाथ।।
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले थे चुम्बन शून्य कपोल।
हाय रुक गया यहीं संसार,

बना सिंदूर अनल अंगार।
वातहत लतिका यह सुकुमार
पड़ी है छिन्नाधार ।।"

स्पष्टीकरण -

स्थायी भाव- शोक

विभाव- आलम्बन- अभिमन्यु

उद्दीपन- अभिमन्यु का मृत शरीर,

आश्रय- अभिमन्यु की पत्नी

अनुभाव- सिर पटकना, छिन्नाधार पड़े होना।

संचारी भाव- स्मृति, विषाद, प्रलाप विलाप

अन्य उदाहरण-

(1) "शोक विकल सब रोवहिं रानी।
रूप शील बल तेज बखानी।।
करहिं विलाप अनेक प्रकारा।
परहिं भूमि-तल बारहिं बारा ।।"

(2) मणि खोये भुजंग-सी जननी, फन-सा पटक रही थी शीश।
अन्धी आज बनाकर मुझको, किया न्याय तुमने जगदीश।।

(3) जथा पंख बिनु खग अति दीना।
मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।
जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

MCQs

1.प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है? प्रस्तुत पंक्ति मे रस है?
(क) करुण (ख) हास्य
(ग) भयानक (घ) वीभत्स

2.सोक विकल सब रोंवहि रानी।रूप, शील बल तेज बखानी।। में कौन सा रस है ?
(क) भयानक (ख) करुण
(ग) वीभत्स (घ)हास्य

3.निम्न में से कौन रस के अंग हैं–
(क) स्थायीभाव (ख) विभाव
(ग) अनुभाव (घ) उक्त सभी

4.करुण रस का स्थायीभाव है
(क) शोक (ख) हास
(ग) उत्साह (घ) भय

5.हास्य रस का स्थायीभाव है
(क) शोक (ख) हास
(ग) उत्साह (घ) भय

6.बिंध्य के बासी उदासी तपोव्रतधारी
महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी,
सो कथा सुनि में मुनि वृन्द सुखारे।।
उक्त पंक्तियों में कौन–सा रस है?
(क) हास्य रस (ख) करुण रस
(ग) वीर रस (घ) शान्त रस

7.मणि खोये भुजंग-सी जननी
फन-सा पटक रही थी शीश।
अन्धी आज बनाकर मुझको,
किया न्याय तुमने जगदीश।।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) वीर (ख) करुण
(ग) हास्य (घ) भयानक

8.विपति बटावन बन्धु बाहु बिनु, करो भरोसो काको' में रस की पहचान कीजिए-
(क) रौद्र रस (ख) शान्त रस
(ग) करुण रस (घ) हास्य रस

9.नाना बाहन नाना बेषा।
बिहसे सिव समाज निज देखा।।
कोउ मुखहीन विपुल मुख काहू।
बिनु पद-कर कोऊ बहु बाहू ।।
उपर्युक्त पंक्ति में रस है-
(क) करुण रस (ख) वीर रस
(ग) शान्त रस (घ) हास्य रस

10. बुरे समय को देखकर गंजे तू क्यों रोय।
किसी भी हालत में तेरा बाल न बाँका होय।।
इन पंक्तियों में कौन-सा रस?
(क) हास्य रस (ख) करुण रस
(ग) वीर रस (घ) शान्त रस

11. जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फन करिबर कर हीना।।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
पंक्तियों में कौन-सा रस है?
(क) श्रृंगार रस (ख) वीर रस
(ग) करुण रस (घ) हास्य रस

(1) सोरठा

इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं।
उदाहरण—

ऽ ।।।। ।। ऽ।
जो सुमिरत सिधि होइ, 11 मात्राएँ
।। ऽ ।। ।।।। ।।।
गननायक करिवर बदन। 13 मात्राएँ
।।। । ऽ ।। ऽ ।
करहु अनुग्रह सोय, 11 मात्राएँ
ऽ । ऽ । ।। ।। ।।।
बुद्धि-रासि सुभ-गुन-सदन।। 13 मात्राएँ

अन्य उदाहरण—

लिखकर लोहित लेख, डूब गया दिनमणि अहा।
व्योम सिन्धु सखि देख, तारक बुदबुद दे रहा।।
बंदऊँ मुनि पद कंजु, रामायन जेहिं निरमयउ।
सरवर सुकोमल मंजु, दोष रहित दूषन सहित।।

(2) रोला

यह सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती है। 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण-

ऽ ऽ ऽ ऽ ।ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ
जीती जाती हुई जिन्होंने भारत बाजी।
निज बल से बल मेट विधर्मी मुगल कुराजी।।
जिनके आगे ठहर सके जंगी न जहाजी।
हैं वे यही प्रसिद्ध छत्रपति वीर शिवाजी।।

। । ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । । । । । । । ऽ । ।
कोउ पापिह पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि बनि बावन वीर बढ़त चौचंद मचावत।
पै तकि ताकी लोथ त्रिपथगा के तट लावत।
नौ द्वै, ग्यारह होत तीन पाँचहिं बिसरावत।।

<u>अन्य उदाहरण</u>-

स्वाति घटा घहराति मुक्ति पानिप सौं पूरी।
कैंधो आवति झुकति सुभ्र आभा रूचि रूरी।।
मीन-मकर जलब्यालनि की चल चिलक सुहाई ।
सो जनु चपला चमचमाति चंचल छवि छाई ।।

1. रोला के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं ?
   (क)14 (ख)16
   (ग)13 (घ) 24

2. रोला में कितनी मात्राओं पर यति होती है?
   (क) 11 और 13 (ख) 13 और 11
   (ग) 12 और 16 (घ) 16 और 12

3. कोउ पापिह पंचत्व, प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि-बनि बावन बीर, बढ़त चौचंद मचावत।।
पै तकि ताकी लोथ, त्रिपथगा के तट लावत।
नौ द्वै ग्यारह होत, तीन पाँचहि बिसरावत।।'
इन पंक्तियों के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ हैं?
(क) सोलह (ख) चौबीस
(ग) बीस (घ) तेरह

4. जिनके आगे ठहर, सके जंगी न जहाजी।
हैं ये वही प्रसिद्ध, छत्रपति भूप शिवाजी।।
इन पंक्तियों में छन्द है-
(क) रोला (ख) कुण्डलिया
(ग) सोरठा (घ) दोहा

5. सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल।।
इन पंक्तियों के दूसरे और चौथे चरण में कितनी मात्राएँ हैं?
(क) 13–13 (ख) 12–16
(ग) 13–11 (घ) 11–11

अलंकार दो प्रकार के होते हैं-

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार

उपमा अलंकार

जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहां उपमा अलंकार होता है।

अथवा

जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इसके चार अंग होते हैं-

उदाहरण- पीपर पात सरिस मन डोला।

- ☞ उपमेय - जिसकी तुलना की जाती है। (मन)
- ☞ उपमान- जिससे तुलना की जाती है। (पीपर पात)
- ☞ साधारण धर्म - जिसके कारण उपमेय और उपमान में तुलना दिखायी जाती है। (डोला)
- ☞ वाचक शब्द- वे शब्द जिनसे तुलना प्रकट हो । (सरिस)

पहचानः- सरिस, सम, समान, भाँति के जैसे, की तरह, इत्यादि वाचक शब्द होंगे वहाँ उपमा अलंकार होगा।

उदाहरणः-

1. हरि पद कोमल कमल <u>से</u> ।
2. मुख मयंक <u>सम</u> मंजु मनोहर ।
3. तुम्हारा मुख चंद्र <u>सम</u> है।
4. फूलों <u>सा</u> चेहरा तेरा कलियों <u>सी</u> मुस्कान है।

रूपक अलंकार

परिभाषा- जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित/अभेद आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पहचान- रूपी अर्थ निकलेगा/योजक चिह्न (-) लगा होगा ।

उदाहरण:-

1. चरन-कमल बंदौ हरि राई।
2. उदित उदयगिरि-मंच, पर रघुवर बाल-पतंग।
3. मनसागर मनसा लहरि, बूड़े बहे अनेक।
4. शशि-मुख पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाए।।

उत्प्रेक्षा अलंकार

परिभाषा-जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

पहचान- मनु, मानो, जनु, जानौ, मानहु, जानहु, मनहु, जनहु, ज्यों आदि शब्द प्रयुक्त होगे।

उदाहरण:-

1. चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन।
   मानहु सुरसरिता विमल जल उछरत जुग मीन।।"
2. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
   मनहु नीलमणि शैल पर आतपु पर्‌यो प्रभात।।"
3. धाये धाम काम सब त्यागी। मनहु रंक निधि लूटन लागी।"
4. चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी। तिलक रेख सोभा जनु चाँकी।।

1. सोहत ओढ़े पीतु पटु, स्याम सलोने गात।

मनौ नीलमणि सैल पर आतपु पर्यो प्रभात।।
उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है-
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक

2. वह सरल विरल काली रेखा, तम के तागे सी जो हिलडुल' में कौन-सा अलंकार है?
(क) अनुप्रास (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) उपमा (घ) रूपक

3. हृदय सिन्धु में उठता, स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन।' पंक्ति में अलंकार है-
(क) रूपक (ख) श्लेष
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) उपमा

4. नीलघन शावक से सुकुमार, सुधा भरने को विधु के पास।'
पंक्ति में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?
(क) रूपक (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) श्लेष (घ) उपमा

5. मनहुँ, मानो, जनु, जानो आदि वाचक शब्द किस अलंकार में प्रायः प्रयुक्त होते हैं?
(क) उत्प्रेक्षा (ख)रूपक
(ग) उपमा (घ) यमक

6. पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों के नोकों से।
मानो झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोकों से।।
इन पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार है–
(क) उपमा (ख) श्लेष
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) रूपक

कर्मधारय समास

परिभाषा- जिसका पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य अथवाएक पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय हो तो, वह 'कर्मधारय समास' कहलाता है।

यूपी बोर्ड परीक्षा मे बार-बार पूछे जाने वाले पद

1. **अधपका-** आधा है जो पका
2. **कनकलता-** कनक है जो लता
3. **चंद्रवदन-** चंद्र के समान वदन
4. **नील कमल-** नीला है जो कमल
5. **नील गगन-** नीला है जो गगन
6. **नीलमणि-** नीली है जो मणि
7. **नीलांबर-** नीला है जो अम्बर
8. **प्रधानमंत्री-** प्रधान है जो मंत्री
9. **प्रधानाध्यापक-** प्रधान है जो अध्यापक
10. **शुभकर्म-** शुभ है जो कर्म
11. **श्वेतकमल-** श्वेत है जो कमल
12. **श्वेतवस्त्र-** श्वेत है जो वस्त्र
13. **सत्पुरुष-** सत है जो पुरुष
14. **स्वर्णकलश-** स्वर्ण का है जो कलश
15. **अल्पज्ञान-** अल्प है जो ज्ञान
16. **चरण-कमल-** कमल के समान चरण
17. **परमानंद-** परम है जो आनन्द
18. **महात्मा-** महान है जो आत्मा
19. **महामानव-** महान है जो मानव
20. **मृगनयन-** मृग जैसे नयन
21. **यशोधन-** यश है धन जिसका
22. **शुभागमन-** शुभ है जो आगमन
23. **श्वेतांबर-** श्वेत है जो वस्त्र

24. **चंद्रमुख**- चंद्र है जो मुख

द्विगु समास

परिभाषा-जिस सामासिक पद में प्रथम पद संख्यावाचक हो एवं द्वितीय पद संज्ञा शब्द हो तथा समस्त पद समूह का बोध करवाए तो उसे 'द्विगु समास' कहते हैं। द्विगु समास का समास-विग्रह करते समय दोनों पदों को लिख कर अन्त में 'का समूह' या 'का समाहार' लिखते हैं।

यूपी बोर्ड परीक्षा मे बार-बार पूछे जाने वाले पद

1. **अष्टकोण**- आठ कोणों का समूह
2. **अष्टग्रह**- आठ ग्रहों का समूह
3. **अष्टाध्यायी**- आठ अध्यायों का समाहार
4. **चौपाया/चारपाई**- चार पावों का समूह
5. **चौमासा**- चार मासों का समूह
6. **चौराहा**- चार राहों का समूह
7. **चतुर्वेद**- चार वेदों का समूह
8. **तिरंगा**- तीन रंगो का समाहार
9. **त्रिकोण**- तीन कोणों का समूह
10. **त्रिभुज**- तीन भुजाओं का समूह
11. **त्रिलोकी**- तीन लोकों का समाहार
12. **त्रिभुवन**- तीन भुवनों का समाहार
13. **दशावतार**- दस अवतारों का समाहार
14. **दोपहर** - दो पहरों का समाहार
15. **दोराहा** - दो राहों का समूह
16. **त्रिवेणी**- तीन वेणियों का समाहार
17. **पंचपल्लव**- पांच पल्लवों का समूह
18. **पंचतंत्र**- पांच तंत्रों का समाहार
19. **पंचपात्र**- पांच पात्रों का समूह
20. **पंचवटी** -पांच वटों का समूह

21. **बारहमासा**–बारह महीनों का समूह
22. **शताब्दी**– शत (सौ) अब्दो (वर्षों) का समूह
23. **षट्कोण**– छह कोणों का समूह
24. **सतसई**– सात सौ दोहों का समूह
25. **सप्तद्वीप** – सात द्वीपों का समूह
26. **सप्तधान्य** –सात दिनों का समूह
27. **सप्तर्षि** – सात ऋषियों का समूह
28. **त्रिफला**– तीन फलों का समाहार
29. **त्रिदेव**– तीन देवों का समाहार
30. **सप्तसिंधु**– सात नदियों का समूह
31. **नवग्रह**– नव ग्रहों का समूह
32. **नवरत्न** – नव रत्नो का समाहार
33. **सप्ताह**–सात दिनों का समूह

बहुव्रीहि समास

परिभाषा – जिसके समस्त पदों में से कोई भी पद प्रधान नहीं होता एवं दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, वह समास 'बहुव्रीहि-समास' कहलाता है। अर्थात् जिस समास में कोई पद प्रधान न होकर (दिए गए पदों में) किसी अन्य पद की प्रधानता होती है।

यूपी बोर्ड परीक्षा मे बार-बार पूछे जाने वाले पद

1. **पीतांबर**– पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात् श्री कृष्ण
2. **चक्रपाणि**– चक्र है हाथ में जिसके अर्थात् विष्णु
3. **बारहसिंगा**– बारह सींग हैं जिसके अर्थात्एक विशेष पशु
4. **लंबोदर**– लंबा है उदर जिसका गणेश
5. **अंशुमाली**– अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी अर्थात् सूर्य
6. **विषधर** – विष को धारण करने वाला अर्थात् सर्प
7. **त्रिनेत्र** – तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शिव

8. **गंगाधर** - गंगा को धारण किया है जिसने अर्थात् शिव

9. **पंचानन** - पाँच हैं मुख जिसके अर्थात् हनुमान

10. **वीणापाणि** - वीणा है हाथ में जिसके अर्थात् सरस्वती

11. **चन्द्रशेखर** - चन्द्र है शिखर पर जिसके अर्थात् शिव

12. **चंद्रधर**- चंद्र को धारण करने वाला अर्थात् शिव

13. **चंद्रशेखर**- चंद है जिसके सिर पर अर्थात् शिव

14. **चक्रपाणि**- चक्र है पाणि में जिनके अर्थात् विष्णु भगवान

15. **चतुरानन** - चार हैं मुख जिसके अर्थात् ब्रह्मा

16. **चक्रधर** - चक्र को धारण करता है जो अर्थात् विष्णु

17. **चन्द्रधर** - चन्द्रमा को धारण करता है जो अर्थात् शिव

18. **चतुर्भुज**- चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु

19. **दशानन**- दस हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण

20. **त्रिलोचन**- तीन लोचन (नेत्र) हैं जिसके अर्थात् शिव

21. **चतुर्मुख** - चार मुख हैं जिसके अर्थात् ब्रह्मा

22. **षडानन** - षट् (छः) आनन हैं जिसके अर्थात् कार्तिकेय

23. **एकदंत** -एक दाँत है जिसके अर्थात् गणेश

24. **पतझड़** - झड़ते हैं पत्ते जिसमें वह ऋतु

25. **गजानन** - गज के समान आनन (मुख) वाला अर्थात् गणेश

26. **मेघनाद**- मेघ के समान नाद (शोर) है जिसका अर्थात् रावण-पुत्र

27. **दिगंबर** - दिशाएँ हैं अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात् शिव

28. **निशाचर** - निशा (रात्रि) में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस

29. **मुरलीधर** - मुरली को धारण करने वाला अर्थात् श्री कृष्ण

30. **कुसुमायुध** - कुसुम है आयुध जिसका अर्थात् कामदेव

31. **पवनपुत्र** - पवन के पुत्र हैं जो अर्थात् हनुमान

32. **चंद्रमुखी**- चंद्र है मुख जिसका वह (स्त्री)

द्वंद्व समास

परिभाषा- जिस समास में समस्तपद के दोनों पद प्रधान हों या दोनों पद सामान हों एवं दोंनों पदों को मिलाते समय 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' आदि योजक लुप्त हो जाएँ, वह समास द्वंद्व समास कहलाता है।

1. **अन्न-जल-** अन्न और जल
2. **अपना-पराया-** अपना और पराया
3. **आचार-विचार-** आचार और विचार
4. **आना जाना-** आना और जाना
5. **उत्तर-दक्षिण-** उत्तर और दक्षिण
6. **उत्थान-पतन-** उत्थान और पतन
7. **हर्ष-विषाद-** हर्ष और विषाद
8. **खरा-खोटा-** खरा खोटा
9. **गांव-शहर-** गांव और शहर
10. **गुण-दोष-** गुण और दोष,
11. **घी-शक्कर-** घी और शक्कर
12. **चराचर-** चर और अचर
13. **जल-थल-** जल और थल
14. **जलवायु-** जल और वायु
15. **जीवन-मरण-** जीवन और मरण
16. **दाल-रोटी-** दाल और रोटी
17. **दिन-रात-** दिन और रात
18. **देश-विदेश-** देश और विदेश
19. **नदी-नाले-** नदी और नाले
20. **नर-नारी-** नर और नारी
21. **पति -पत्नी-** पति और पत्नी
22. **पाप- पुण्य -** पाप या पुण्य

23. पाणि-पाद- पाणि और पाद
24. पिता-पुत्र- पिता और पुत्र
25. भवानीशंकर- भवानी और शंकर
26. माता- पिता- माता और पिता
27. यश-अपयश- यश और अपयश
28. राजा-रानी- राजा और रानी
29. राधा-कृष्ण- राधा और कृष्ण
30. राम-कृष्ण- राम और कृष्ण
31. राम-रहीम- राम और रहीम
32. रुपया-पैसा- रूपया और पैसा
33. शुभ-अशुभ- शुभ और अशुभ
34. शुभाशुभ- शुभ और अशुभ
35. सुख-दुख- सुख और दुख
36. हानि-लाभ- हानि और लाभ
37. हार-जीत- हार और जीत

MCQs

1. 'शताब्दी' में कौन-सा समास है?
   (क) द्विगु (ख) कर्मधारय
   (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वन्द्व

2. 'त्रिवेणी' में कौन-सा समास है?
   (क) द्वन्द्व (ख) कर्मधारय
   (ग) द्विगु (घ) अव्ययीभाव

3. 'दशानन' का समास-विग्रह है-
   (क) दस हैं मुख जिसके (रावण)

(ख) दस है मुख जिसके (विष्णु)
(ग) दिशाएँ ही हैं वस्त्र जिसके अर्थात् नग्न
(घ) दस है आँखे जिसकी (पार्वती)

4. 'घी-शक्कर' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व
(ग) द्विगु (घ) कर्मधारय

5. 'जल और थल' में समास है?
(ग) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व
(घ) द्विगु (ग) कर्मधारय

6. 'तिरंगा' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व
(ग) द्विगु (घ) कर्मधारय

7. 'चंद्रशेखर' में कौन सा समास है
(क) बहुव्रीहि (ख) द्वंद्व
(ग) तत्पुरुष (घ) कर्मधारय

8. 'आना-जाना' में कौन सा समास है
(क) तत्पुरुष (ख) द्विगु
(ग) द्वंद्व (घ) कर्मधारय
9. 'पाप-पुण्य' में कौन सा समास है
(क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व

(ग) द्विगु (घ) कर्मधारय

10. 'बारहमासा' में कौन सा समास है
(क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व
(ग) द्विगु (घ) कर्मधारय

उपसर्ग

ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व (पहले) जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

1. **अ**—अनाथ, अधर्म, अविश्वास, अचेतन, अधीर, असुविधा, अकर्त्तव्य।
2. **अन**—अनजान, अनमोल, अनसुना, अनावरण, अनावश्यक, अनादर।
3. **अनु**—अनुपस्थिति, अनुशासन, अनुचर, अनुगमन, अनुराग, अनुसरण।
4. **अप**—अपमान, अपराध, अपवाद, अपशब्द, अपयश, अपकीर्ति, अपव्यय।
5. **अभि**—अभिशाप, अभिलाषा, अभिप्रेरणा, अभिमान, अभियोग, अभिमन्यु, अभ्युदय।
6. **अधि**— अधिमान, अधिकार, अधिपति, अधियाचन, अधिष्ठाता, अधिवक्ता।
7. **उप**—उपस्थिति, उपसंहार, उपवन, उपकार, उपयुक्त, उपदेश, उपमंत्री।
8. **सु**—सुवास, सुडौल, सुपात्र, सुपुत्र, सुजन, सुलभ, सुकुमार, सुमार्ग, सुव्यवस्थित।

9. **सह**—सहचर, सहपाठी, सहयोग, सहमत, सहमति।
10. **परि**—परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिमाण, परिमार्जन।
11. **निर्**—निराकार, निर्जन, निर्भय, निर्वाह, निर्धन, निर्मम।

MCQs

1. 'उपेक्षित' शब्द में उपसर्ग है-
   (क) अप (ख) उप
   (ग) उपे (घ) क्षित

2. 'सुदर्शन' शब्द में उपसर्ग है-
   (क) सुद (ख) सु
   (ग) सुर (घ) दर्शन

3. 'अपार' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-
   (क) आ (ख) अ
   (ग) अन (घ) उप

4. 'अभ्यागत' में उपसर्ग है
   (क) अ (ख) अभि
   (ग) आ (घ) अप

5. 'अपव्यय' में उपसर्ग लगा है-
   (क) उप (ख) अ
   (ग) अप (घ) आ

1. मछली - मीन, मत्स्य, मकर, अंडज
2. मातृ (माता) - माँ, माता, जन्मदात्री, जननी, अम्बा, अम्बिका, प्राणदा
3. गाय (गौ) - धेनु, सुरभि, पयस्विनी, दोग्ध्री
4. मृत्यु - निधन, देहावसान, मौत, देहांत, मरण
5. महादेव - शिव, शंकर, भूतनाथ, त्रिलोचन, रुद्र, गौरापति, भूतेश
6. वायु- वात, पवन, समीर, समीरण, अनिल, मारुत
7. पिता - पितृ, जनक, जन्मदाता, तात, जन्मद, कारणम्, जन्महेतु
8. अरण्य- अटवी, विपिन, जंगल, कानन, वन, कान्तार
9. अमृत - सुधा, पीयूष, सोम, अमी, सुरपेय, अमिय
10. साँप - सर्प, भुजंग, नाग, अहि, विषधर, व्याल, फणि
11. सूरज - रवि, आदित्य, दिनकर, भानु, भास्कर, दिनेश, दिवाकर, सूर्य, मित्र।
12. अमृत - सुधा अमी, पीयूष, सोम
13. सागर- सिन्धु, रत्नाकर, जलधि, जलनिधि, नदीश, उदधि, पयोधि

14. पर्वत - पहाड़, गिरि, अचल, शैल, भूधर, नग
15. संसार- दुनिया, विश्व, भूमण्डल
16. भाई - भ्राता, तात, सहोदर, अनुज
17. रात- रजनी, निशा, रात्रि, राका
18. वर्षा - पावस, बरसात, चौमासा, वृष्टि, मेह
19. लता - बेल, वल्लरी, वल्ली, लतिका
20. विष्णु- गरुड़ध्वज, जनार्दन, अच्युत्, चक्रपाणि, नारायण
21. हाथी - हस्ती, गज, करि, गजेन्द्र, नाग, कुंजर, द्विरद
22. यमुना - सूर्यसुता, कालिन्दी, तरणि- तनूजा, सूर्यतनया
23. मोर - मयूर, केकी, कलापी, सारंग, शिखी, हरि
24. हंस - मुक्तभुक्, मराल, सरस्वती वाहन
25. लक्ष्मी - पद्मा, रमा, कमला, श्री, चंचला
26. वृक्ष - पेड़, तरु, द्रुम, पादप
27. आम - आम्र, रसाल, सहकार, पिकबन्धु
28. हिरन - कुरंग, सारंग, मृग
29. वज्र - अश्मि, पवि, कुलिस।
30. चाँदनी - ज्योत्स्ना, चंद्रिका, कौमुदी
31. जल - पानी, तोय, नीर, पय, अंबु, सलिल, वारि
32. तलवार - करवाल, खड्ग, शमशीर, चंद्रहास

33.तारा- तारक, नक्षत्र, उडु, नखत

34.तालाब - सर, पुष्कर, सरोवर, ताल, जलाशय, तड़ाग, सरोवर

35.तीर - बाण, शर, सायक, शिलीमुख

36.दिन - वार, दिवस, वासर, दिवा।

37.दुःख - व्यथा, पीड़ा, कष्ट, शोक, विषाद, क्षोभ

38.देवता- सुर, देव, अमर, आदित्य

39.दूध - पय, दुग्ध, क्षीर,

40. धन- श्री, दौलत, अर्थ, संपत्ति, वित्त, मुद्रा

41. धनुष चाप, कोदंड, धनु, शरासन

42.नदी -सलिला, सरिता, सरित, तटिनी, नद

43.नारी - महिला, स्त्री, अबला, रमणी, कामिनी

44.भृत्य- अनुचर, सेवक, परिचारक, दास

45.नाव- बेड़ा, पोत, तरी, तरिणी

46.पक्षी - (खग) विहग, विहंग, पखेरू, खग, द्विज, अंडज

47.पति- बालम, साजन, भर्ता, वल्लभ, कांता, स्वामी

48.पत्नी - प्रिया, वामा, वधू, अर्द्धांगिनी, गृहिणी, दारा

49.ध्वज- पताका ध्वजा, झंडा, निशान, ध्वज

50.पत्थर - पाहन, पाषाण, उपल, प्रस्तर, अश्म।

51. हवा- पवन, वायु, अनिल, समीर, वात, मारुत

52.पुष्प- फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम

53.पुत्र - बेटा, सुत, आत्मज, तनय, नंदन, लाल

54.पुत्री- बेटी, सुता, आत्मजा, तनया, कन्या, तनुजा

55.पृथ्वी - भू, भूमि, धरा, धरणी, धरित्री, वसुंधरा, धरती

56.छवि- द्युति, ज्योति, प्रभा, रोशनी

57.बंदर - वानर, हरि, वानर, मर्कट, कपि, शाखामृग

58.शावक- शिशु, बाल, बच्चा, लड़का

59.ब्राह्मण - भूदेव, भूसुर, विप्र, द्विज

60. बादल - वारिद, पयोद, नीरद, जलद, जलधर, मेघ, पयोधर

61. बिजली- सौदामिनी, दामिनी, चपला, चंचला, तड़ित

62.ब्रह्मा - अज, विरंचि, प्रजापति, स्वयंभू, विधाता, पितामह

63.भौंरा - भ्रमर, मधुकर, मधुप, अलि, भृंग, षट्पद।

64.अग्नि - अनल, पावक, ज्वाला, वह्नि, आग, हुताशन।

65.अतिथि - आगंतुक, मेहमान, पाहुना, अभ्यागत

66.अंधकार - तिमिर, तम, अँधेरा, तमिस्र

67.घोड़ा- घोटक, हय, वाजि, सैंधव, तुरंग, अश्व

68.आँख - नेत्र, चक्षु, नयन, दृग, लोचन

69.आकाश- नभ, व्योम, अंबर, अनंत, गगन, आसमान,

70. आनंद - खुशी, प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास

71. इच्छा - अभिलाषा, कामना, लालसा, मनोरथ,

72. इंद्र- देवेंद्र, सुरेश, सुरेंद्र, देवेश, देवराज

73. ईश्वर - प्रभु, भगवान, परमेश्वर, ईश, अखिलेश,'परमात्मा

74. उन्नति - प्रगति, उत्थान, उन्नयन, उत्कर्ष, विकास

75. उपवन - उद्यान, बाग, बगीचा, वाटिका, कुसुमाकर, बाग

76. कपड़ा (वसन) - पट, वस्त्र, चीर, अंबर

77. कमल जलज, पंकज, वारिज, सरसिज, सरोज, अंबुज, राजीव, अरविंद

78. कामदेव - अनंग, मनोज, मदन, रतिपति, कंदर्प

79. किरण - अंशु, रश्मि, मरीचिका

80. किनारा - कूल, तट, तीर, पुलिन

81. कृपा - दया, अनुकंपा, अनुग्रह

82. कोयल - पिक, वसंत दूत, कोकिल, पिक, कोकिल, परभृत, वसन्तदूत। श्यामा, कोकिला

83. कृष्ण- केशव, माधव, गोपाल, मोहन, मुरारि, घनश्याम

84. दुष्ट- खल, दुर्जन, नीच, अधम, कुटिल

85. गणेश- गजानन, लंबोदर, गणपति, गजवदन, एकदंत, विघ्नेश।

86. गंगा- अलकनंदा, भागीरथी, सुरसरिता, मंदाकिनी, सुरसरि

87.घर- भवन, आलय, निकेत, सदन, निकेतन, धाम, गृह

88.चतुर- कुशल, योग्य, निपुण, दक्ष, प्रवीण

89.चाँद- हिमांशु, सुधांशु, इंदु, सोम, सुधाकर, रजनीश, शशि, चंद्रमा।

MCQs

- 'नदी' का पर्यायवाची शब्द नहीं हैं
  (क) सलिला (ख) सरित
  (ग) रमणी (घ) तटिनी
- 'खग', 'द्विज', 'अण्डज', विहंग आदि किसके पर्यायवाची हैं?
  (क) बादल (ख) पक्षी
  (ग) आकाश (घ) नदी
- 'अम्बर', 'अनन्त', 'गगन', 'व्योम' आदि किसके पर्यायवाची हैं?
  (क) बादल (ख) विहंग
  (ग) आकाश (घ) पर्वत
- निम्न में से 'कमल' का पर्यायवाची है-
  (क) वारिद (ख) अरविन्द
  (ग) जलद (घ) अम्बुधि
- 'सुरेन्द्र, 'देवेश', 'देवराज' आदि किसके पर्यायवाची शब्द हैं-
  (क) विष्णु (ख) शिव
  (ग) इन्द्र (घ) नारद

तत्सम	तद्भव
1. लक्ष	लाख
2. लक्ष्मण	लखन
3. गोधूम	गेहूँ
4. ग्रीवा	गर्दन
5. गर्गर	गागर
6. गात्र	गात
7. ग्राम	गाँव
8. ग्राहक	गाहक
9. गर्दभ	गधा
10. अज्ञान	अनजान
11. अन्न	अनाज
12. आश्यर्च	अचरज
13. आर्द्रक	अदरक
14. आलस्य	आलस
15. अग्नि	आग
16. अद्य	आज
17. ओष्ठ	ओठ
18. आश्रय	आसरा
19. आम्र	आम
20. अश्रु	आँसू
21. अक्षि	आँख
22. अक्षर	आखर
23. अर्द्ध	आधा

24.	अमृत	अमिय
25.	अमावस्या	अमावस
26.	अंगुलि	अंगुली
27.	अंधअंधा	
28.	अंगुष्ठ	अँगूठा
29.	अंधकार	अँधेरा
30.	स्नेह	नेह
31.	नाारिकेल	नारियल
32.	निद्रा	नींद
33.	नक्षत्र	नखत
34.	जन्म	जनम
35.	ज्येष्ठ	जेठ
36.	जंबु	जामुन
37.	जंघा	जाँघ
38.	जिह्वा	जीभ
39.	त्वरित	तुरंत
40.	तड़ाग	तालाब
41.	ताम्र	ताँबा
42.	पुष्पफूल	
43.	फाल्गुन	फागुन
44.	चणक	चना
45.	चैत्र	चैत
46.	चतुष्पथ	चौराहा
47.	चर्म	चाम

48.	चंद्रिका	चाँदनी
49.	चंद्र	चाँद
50.	चरण	चरन
51.	चर्मकार	चमार
52.	दुग्ध	दूध
53.	क्षण	छन
54.	छिद्र	छेद
55.	दशम	दसवाँ
56.	छत्र	छाता
57.	दंत	दाँत
58.	दर्शन	दरसन
59.	दधि	दही
60.	उलूक	उल्लू
61.	उच्चारण	उच्चारन
62.	दंड	डंडा
63.	सूर्य	सूरज
64.	शुष्क	सूखा
65.	शैय्या	सेज
66.	सौभाग्य	सुहाग
67.	स्मरण	सुमिरन
68.	शाक	साग
69.	शत्	सौ
70.	सप्त	सात
71.	श्रावण	सावन

72.	श्वास	साँस
73.	श्रवण	सरवन
74.	स्वप्न	सपना
75.	श्रृंग	सींग
76.	सम्पत्ति	संपति
77.	सायं	शाम
78.	रात्रि	रात
79.	शाप	श्राप
80.	पौष	पूस
81.	पत्र	पत्ता
82.	पुत्रवधू	पतोहू
83.	प्रस्तर	पत्थर
84.	पुष्प	पुहुप
85.	पुस्तक	पोथी
86.	पार्वती	पारबती
87.	पाषाण	पाहन
88.	प्रमोद	परमोद
89.	परमार्थ	परमारथ
90.	पाहन	पत्थर
91.	प्रहेलिका	पहेली
92.	पक्षी	पंछी
93.	भक्त	भगत
94.	भ्रमर	भौंरा
95.	वाष्प	भाप

96.	भ्रात	भाई
97.	भिक्षा	भीख
98.	निर्गुण	निरगुन
99.	स्थल	थल
100.	मृत्तिका	मिट्टी
101.	मिठाई	मिष्ठान
102.	कृष्ण	किशन
103.	वधू	बहू
104.	मूषक	मूस
105.	मुष्टि	मुट्ठी
106.	मुख्य	मुखिया/प्रमुख
107.	मुख	मुह
108.	मनुष्य	मानुस
109.	मौक्तिक	मोती
110.	मृत्यु	मौत
111.	मयूर	मोर
112.	मातृ	माता
113.	मस्तक	माथा
114.	मातुल	मामा
115.	मित्र	मीत
116.	मक्षिका	मक्खी
117.	क्लेश	कलेस
118.	कूप	कुआँ
119.	कुंभकार	कुम्हार

120.	कुमार	कुँवर
121.	कपाट	किवाड़
122.	कच्छप	कछुआ
123.	कटु	कड़ुवा
124.	कर्ण	कान
125.	कज्जल	काजल
126.	काक	कौआ
127.	कोकिला	कोयल
128.	कार्तित	कातिक
129.	कर्म	काम
130.	काष्ठ	काठ
131.	कंटक	काँटा
132.	कर्पूर	कपूर
133.	कर्पट	कपड़ा
134.	कीट	कीड़ा
135.	कीर्ति	कीरति
136.	कपोत	कबूतर
137.	स्कंध	कंधा
138.	वृद्ध	बूढ़ा
139.	बिल्व	बेल
140.	वृषभ	बैल
141.	वर्तिका	बत्ती
142.	वार्ता	बात
143.	बाहु	बाँह

144.	वर्णन	बरनन
145.	वर्ष	बरस
146.	वर्षा	बरखा
147.	वृश्चिक	बीछी
148.	भगिनी	बहन
149.	बधिर	बहरा
150.	वणिक	बनिया
151.	विवाह	ब्याह
152.	इक्षु	ईख
153.	उपरि	ऊपर
154.	उष्ट्र	ऊँट
155.	उच्च	ऊँचा
156.	क्षेत्र	खेत
157.	क्षीर	खीर
158.	स्तंभ	खंभा
159.	घट	घड़ा
160.	घटिका	घड़ी
161.	गृह	घर
162.	घृत	घी
163.	धर्म	धरम
164.	धैर्य	धीरज

वाच्य, वाक्य, विकारी -अविकारी -सम्पूर्ण